CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

2.2
२०६

विवेकी राय

जनता के पोखरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जनता के पोखरा

(तीनि गो भोजपुरी कविता)

विवेकी राय

भोजपुरी साहित्य संस्थान

शाहगंज, महेन्दू, मऊ-५

Rajiv Jha Math, Mahendru, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Janta ke Pokhara :

A collection of Bhojypuri poems.

By

Dr. Viveki Ray.

● जनता के पोखरा : भोजपुरी कविता संग्रह

(C) कवि

● सस्करण : पहिला, मार्च, १९८४

● मूल्य-पाँच रुपया

● प्रकाशक —

भोजपुरी साहित्य संस्थान

महेन्द्रू, पटना -६

● मुद्रक

दि प्रेस दीप्ति,

भीखना पहाड़ी पटना-४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहनाम ई बा कि

शरद आ बसन्त का बीचे ई जनता के पोखरा आप के संउपि रहल बानी। चीज पुरान हो गइलि बाकी एकर स्वाद अबहीं टटका होई। पुरानो में केतना पुरान? ओतने कि ओह समय लोग हमरा के 'कबीजी' कहे। हम कविता लिखीं आ गाँवें-गावें सम्मेलन कराई। एही जनम में ऊ कुल्हि अब सपना नियर जनात बा। साचो के ई संसार सपना ह। 'कहाँ गइले ऊ कबी जी?' हम खुद उनकरा ओह समय का कवितन में झाँकि के देखत बानी त बहुत मनोरजन होत बा! कविता का थोरे बाड़ी स ? कई सौ कविता! बाकि साच मानीं, ओह खड़ी बोली हिन्दी का अपना ढेर-ढेर कवितन में ई तीनिये गो कविता सुमेर बाड़ी स। एही से एह कवितन के सँउपत बड़ा सुख मिलल बा। हमरा उमेदि बा कि एह कवितन के आप के नेह आ आपनाव मिली।

—विवेकी राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

कवन कवन कविता

१. आइलि शरद बहार

२. जनता के पोखरा

३. कादो इहे वसन्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

जामवन्ती

सावित्री

सन्तोष

का नावें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

जनता के पोखरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

आइलि शरद बहार

पहरा बीति गइल पावस के
लोग भइल खुसहाल,
तान ताल पर कलरव उतरल
धरती भइलि निहाल।

झलकलि पूरुब ओर भोर के—
गोरिआ दमकल भाल,
चमकलि पाँव पखारलि मोती
गमकल मलाल गुलाल।

हंसा चलल विदेसे अइली
ढेंकी बान्हि कतार।

आइलि शरद बहार ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

झिरझिर बहल जोमाइल नारा
लवटल नदी बिसास
सिहरल सून अरार निछाने
फूलल गह गह कास ।

गुलगुल पलिहर पर तरनाइलि
आइलि फफनलि घास
हँसि हँसि हँसुआ चलल गुजरिया
बतरस भरल लहास ।

झूमि उठल मद भीनल बजरा
खंजन नयन निहार ।

आइलि शरद बहार ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

चमचम किरिनि सरग से उतरलि
उज्जर दिन पुरवार
निरमल रइनि अँजोरिया उमड़लि
बिटिया बनलि कुँआर।

उझिलल अमृत बुझाइल सगरे
फूलि उठल भिनुसार
मातलि बकुल कियारी झरि झरि
परलन हरसिंगार।

बाग बगइचा में जुड़छाँही
सीतलि चललि बयार।

आइलि शरद बहार॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

फूलल कँवल उड़ल रस रसिया
भौंरा भरल गुमान
झिलमिल कुहरा चलल, दनाउर
भइले मधुर विहान।

खूललि दसो दुआरि, खेत में
हँसल अगहनी धान
बावग चिन्ह लमेरा जामल
गावत चलल किसान।

अगरा गइल पपिहरा स्वाती
धनिया करु सिंगार।

आइल शरद वहार।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

धहरा गइल दशहरा मेला
चिखा गइल पकवान
चारु भइया चारि चान जस
लीला के मैदान ।

हँसीखुशी में छउकल लइका
लउकल धनुही-बान
टटके दिया-दियारी दुरदिन
दू दिन के मेहमान ।

कातिक लगल नहान, सिवाने
आइल खूब सुतार ।

आइलि शरद बहार !

—सोनवानी
३० अक्तूबर '५५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

जनता के पोखरा

(१)

राज भरपूर बा,
नाँव मशहूर बा,
काहे तू उदार पोखर—
काहे मजबूर बा ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तोहके बन्हावल केहू, तोहके सँवारल केहू
हीयरा के सुन्दर सपना, तोहके उरेहल केहू

सरगे के सोझ सीढ़ी सोचि के बनावल केहू
तोहरा के देखि देखि नैनवा जुड़ावल केहू

तोरे लागि भइया प्रान नेवछावर कइले केहू
जोगी बनि के बने-बने रटना लगवले केहू

केहू आइ तोरा तीरे सोभा बरिसवले बाड़े
केहू आइ तोरा टे मेघ जइसे छवले बाड़े

घोड़वा कुदावत राजा आइके जुड़ाई गइले
बेलमल बटोही थाकल राही अगराई गइले

केतने बधउआ बजले केतने चढ़उआ चढ़ले
मेला करमे के लागल धाजा रे धरमवा उड़ले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

छपकी छपको गइली साँवरी गुजरिया आरी
केतने चमकि रे गइली गर्‌हू गुन गोरिया बारी

देहि माँजि गइले केतने उमड़ल सरकस गोइयाँ
केतने चबइले लोहा हालि का कहीं गोसइयाँ

केतने बवण्डर उठले आइके बुतइले नीके
तोहरे धरम वा साधू गाँव बाँचि गइले जी के

खिँचले पिआसी डोरी गोरू गाइ डहरल अइले
पाइ के मँहकिया मोहल भँवरा खिचाइल अइले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तोहरा के देखी कला कविताई फूटल सोता
फूललि फरलि फुलवारी, ज्ञानियो लगवले गोता
पत्थले के चूप जिभिया का कहो सुनाओ केके
मीठ रे दरदवा दूख लो देइ गइले जेके

खुललि कहानी बा
बितलि जवानी बा
माथे ऊपर पुरुखन का
चरनन के धूरि बा !

राज भरपूर बा···· ···· ····

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

आजु तोहार दाही ना, केहू तोरे मोही ना
बाति बीति गइली भइया, केहू तोरे छोही ना
टूटला जवानी जइसे सीढ़ी छितराइलि बाड़ी
बेकसी गरीबी कादो भारी भइराइलि बाड़ी

पाँव का बेवाइ अइसन फाटल दरार बाड़ं
बूढ़ का बेआस अस ऊठती बाजार बाड़ी
पोखरा के नाकि लट्ठा लाजे झुकि झूकि गइले
बुरुजी बेचारी सारी चीख के चटकि फटि गइली

फोरिके पलस्तर पाजी जामि गइले झाड़ झारी
काँटा कहरवले दखिन ओरी भगरभाँड़ भारी
काल मरकीलौना ईंट ईंट के उघरले बाड़े
पोखरा देखवले दाँत मुँह करीखवले बाड़े

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

जूग बीति गइले सूने तूलसी के चउरा वाड़े
खाँची भर पसरल फइलल घ्रवा गन्हउरा वाड़े
रंग ऊड़ि गइले बाकी तनले सिवाला वाड़े
आसनी विछवली मकरी कोने-कोने जाला बाड़े

भीतर से सालेवाला भारी भारी काँटा बा
झंखे लखरउआँ ठाढ़े सूने-सूना मींटा बा
कुहुकेले कबहीं कवहीं कारी कोइलरि निरदइया
ठनकेले कबहीं कबहीं गइया चरवहवा भइया

फूल पर किरिनिया कबहीं घूँघरू वजावति आवे
रानिया बसन्ती कवहीं बेनिया डोलावति आवे
टूटि के खदरि जा बाकी लोगवा नहाओ धोओ
थाकी के थसकि जा बलू पंचलोग जीओ खाओ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सेस मुसुकान बा
बाँचल परान बा
केतना अँगेजबऽ चोट
देहि चूर-चूर बा !

राज भरपूर बा..... ....

(३)

दूख जनि मानऽ दादा जिनिगी तोहार सही
तोहरे से जुड़ाइल ई झुराइल संसार रही
जिआ जन्तु केतने अघा गइले ना ठेकाना बा
करनी के अपना कतहीं गवले नाहीं गाना बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

राईं धूईं अपने में रमलऽ रे रहलऽ दानी
दूनिया विमल हो गइली आपन कइआइल पानी
काल कूर पापी भइया पानी चाटि जाई जहिया
अपना लोगन का दूखे छाति फाटि जाई जहिया

परजा परानी भागे आगि लागि जाई तहिया
देसवा के आसमान आहि रे धुँआई तहिया
कान मूँदि लिहले पचो केहू नाहीं गँवगर रे
पोखर के निंदिया सूते वाला सेर सिंवगर रे

भागि वरिआई पोखर तुहऊँ बसल रे बाड़ऽ
काहें कि वनावे के बा वहाना, बिगाड़ल बाड़ऽ
तोहके बनावे वाला हो गइले गनेस गउरी
तोहरो के सोखी सोखी मोट मोट भइले अउरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अइसन सोखले सोतिया कमल कुम्हिलाई गइले
पाला अइसन परले की कोंढ़ि कठुआई गइली
अँगवा के मइलि लेके जेकर करिखाई गइलऽ
डाढ़ा पीके जेकर तू सूखले तँवाई गइलऽ

ऊ भइल मतलबी कादो भारी परि बज्जर गइले
वाढ़ि में लहास देखलीं जाड़ि में विलाई गइले
वीतल मनसायन गायन सोभा के बीतल पहरा
तोर खाली पोखर पेट भम्ह आजु लोटे बहरा

सभके द तरी तू
जरि घरी घरी तू
दुनिया छछाइलि तोहके
घाव घाम घूर बा।

राज मशहूर बा.... ....।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

रच्छपाल खोजत तोरी जिनिगी सेराई गइली
आसमाने सब दिन एगो रही छत्र छांह गइले
दुनिया के सेहो देखी बीलखेले रतिया बदी
सेहो देखी कनई के माथ धूने दिनवा नदी

कोखी से धरतिया का जनमि वीसरवले बाड़े
चूमे आसमान पाँवऽ पाँक में फंसवले बाड़े
हाथ मारे हवा बोचे भईले बेहाथ पानी
नरको में ठेलाठेली, धिरिक बा अइसन जवानी

तलफी भूंजाइलि जिनिगी थथमा लगले मनुसाई
अइसे में आजादी के रामजाने ई टिसाई ?
सत्त के वरुन देवता जीवनऽ फँफाये दीहऽ
लुच्चवन के लीलि लीलि लहरि फोंफियाये दीहऽ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

बूड़ि गइलि सुखले बाड़ी नाव उपराये दीहऽ
पानी में पिआसल बाड़ी मछरियो अघाये दीहऽ
जागे दऽ धरम आपन, आगी ऊगी जाये दऽ
पेनी तू, परान, पगरी, पानी के मोटाये दऽ

जागऽ तनि जागऽ जागऽ जागऽ महादेव बुढ़वा
बमकऽ की हीलसि जा ऊ पोढ़ स्वारथिन के गढ़वा
ठनकऽ की सबद तोहरो आरपार गूँजो झनझन
धमकऽ की धरती छेदी जलधारा फाटो सनसन

ऊमड़ऽ की बूड़ी जा ऊ सगरे लाचारी झारी
बान्ह टूटि जाये दऽ की मचि जाव कुहराम भारी
बहि जाऊ दुनिया ई जमाना जरि जाये दऽ
काटि पेट भरलऽ जिनके, माटी लागी जाये दऽ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

मटिहा सुहाग तू
आपन सुभाग तू
सोना बरिसावे वाली
दिल्ली वड़ि दूर बा।

राज भर पूर बा।
नाँव मशहूर बा।
काहे तू उदास पोखर
काहे मजबूर बा।

कमसड़ी
२० मार्च '५६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कादो इहे बसन्त

साल माथ घहराइल आइल खेती मुँह वइसाख,
कोड़ि कमा खाये वाला के दगलि सलामी लाख।
सुनहट गाँव उकाँव उठवले मनसायन खरिहान,
जहाँ पसेना के गाना वा अन धन बा भगवान।

ऊगल माहुर घाम पछिवहीं
लूचि अगिन के बान,
दुपहरिया पाँतर में नाचलि
वाँचल कठिन परान।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

पानी भइल परान, पनिसरा
बइठल धरम दुआरि,
जिआ जन्तु छिछिआइल डहके
बन-बन जीभि पसारि।

कादो इहे बसन्त, अंगमें
बरलि टँटइनी दाह,
बउराइल मनवा अलसाइल
खोजे गुदगर छाँह।

माकति चलि किरिनि अगिआइलि
बान्हि हवा के पाँखि,
खेह उड़लि बड़ि, देह बुड़लि,
भरि धूरि भठाइलि आँखि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

चाकलि रासि सुहानी कासी
मंदिल पासे पास,
झलकल छँलल धूप में जइसे
सिव वाला कैलास।

सिरपर पनिहा डोलल, भूसा
उड़ि-उड़ि करत किलोल,
लछिमी चरन परल धरती पर
आँचर उड़ल अमोल।

उमड़लि गंगाधार कि सिरपर
संकर जी महराज,
गरहू बनि संगवाई छुटलन
भूसा रूसल आज।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

बा किसान झंडा अनाज के
टाढ़ हाथ में थेघ,
डहत मजूर दया आइलि भा
ओनवल उज्जर मेघ।

टपकि टपकि महुआ पतराइल
कोंचा चढ़ल अकास,
निविया सोन्ह सोन्हाइलि फूललि
झूमलि खाइ वतास।

छोट टिकोरा मन ललचाइल
वाउर भइया स्वाद,
छिपिछिपि के कोइलिया वोललि
आइलि केकर याद।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भोर भइल भेंगरजवा बोलल
डाललि मलय बहारि,
मरलसि गमक परोरि जुड़ाँसीं
जादू, लिहलसि भोरि।

अलगल झाँप अन्हार, दूर से—
धाहल साफ सबेर,
उभरल अइसन चित्र नयन का
आगा, सरग अनेर!

'पलुहलि गाँछी,, छिछिंल तलैया
काटल गोजई खेत,
बाट बाट में ठाढ़ अकौआ
माला फूल समेत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

'माथ छितनिया नवही चलली
वनसपती कि सदेहि ?
रस में पागुर करत डहरले
चउआ ताकि सरेहि।'

बंसवारी बारी में चहचह
गूँजि गँजाइल गान,
धरती चूमि फूलाइलि कतहीं,
नन्हकी घासि अजान।

मनके चउआ कइल हिराउर
धनिया के लखराँव,
बर छँहिया अँकवारी भरि भरि
जीअल गाँव-गिराँव !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कठिन तवाठी में पवले बा
टूसा रस के धारि।
ई धरती के छोह कि पाकड़ि
आजु भइलि छतनारि।

ई धरती के छोह कि दुनिया
हरियर पीके आगि,
एगो धरती का बेटा के
जरलि जेठले भागि!

खढ़िया
२३ अप्रेल' ५७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विवेकी राय

छपल साहित्य के विवरण

दूगो कविता संग्रह, सात गो कहानी संग्रह, पाँचि गो उपन्यास, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, निवन्ध आ ललित निवन्ध मिला के कुल्हि छव गो पुस्तक, शोध आ समीक्षा के चारि गो पुस्तक, भोजपुरी भाषा में ई किताबि मिला के कुल्हि चारि गो रचना, तीनि गो सम्पादित पुस्तक, चारि-पाँच गो जल्दिये छपे वाल आ वहुत ढेर अप्रकाशित।

० ० ० ० ० ०

लेखक का पुस्तकन में सोना माटी, लोकऋण, गँवई गन्ध गुलाब, हिन्दी उपन्यास, उत्तरशती की उपलब्धियाँ, जलूस रुका है आ ओझइती, कालातीत बहुत मसहूर भइली।

० ० ० ० ० ०

वर्त्तमान समय में स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाजीपुर में सेवारत।

सम्पर्क सूत्र : (वड़ीबाग, गाजीपुर) उत्तर प्रदेश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection